श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत

रामायण

॥ किष्किन्धा काण्ड ॥

श्री विनायकी टीका सहित

जो

वाच्यार्थ व्यंग्यार्थ गूढ़ार्थ पूरित तथा विविध

कविवर वाणी विभूषित है.

जिसे

पं० विनायक राव (उपनाम कवि 'नायक')

(पूर्व) असिस्टेण्ट सुपरिंटेंडेंट ट्रेनिङ्ग इंस्टिट्यूशन

(साम्प्रत) पेंशनर

जबलपुर ने

रचकर प्रकाशित किया.

श्री नरमदा लहरी रायल प्रिन्टिङ्ग प्रेस जबलपुर में मुद्रित हुआ.

सन् १८६७ ई० के एक्ट २५ के अनुसार इसकी रजिस्ट्री की गई है, इसे सिवाय ग्रंथ कर्त्ता के किसी को छापने का अधिकार नहीं है ॥

प्रथमवार २००० } सम्वत् १९६९ सन् १९१३ { न्यौछावर ।=) आ०

... ...

मोहर

... ...